SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-02, December- 2024
www.shikshasamvad.com

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन की उपादेयता

अनंत कुमार
शोधार्थी (शिक्षा संकाय)
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर
Email: samparkanantkumar@gmail

सारांश :

स्वामी विवेकानंद इस युग के पहले भारतीय हैं जिन्होंने हमें हमारे देश की आध्यात्मिक श्रेष्ठता और पाश्चात्य देशों की भौतिक श्रेष्ठता से भी परिचित कराया और हमें अपने भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास के लिए सचेत किया। इन्होंने उदघोष किया कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करो और शिक्षा द्वारा उन्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुशलता पूर्वक कार्य करने के लिए सक्षम बना कर उन्हें स्वावलंबी बनाओ,आत्मनिर्भर बनाओ, निर्भय बनाओ, स्वाभिमानी बनाओ और इन सबसे ऊपर एक सच्चा मनुष्य बनाओ।

एक ऐसा मनुष्य जो मानव सेवा द्वारा ईश्वर की प्राप्ति में सफल हो। इन्होंने अपने दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों को मूर्त रूप देने के लिए रामकृष्ण मिशन की स्थापना की तथा देश-विदेश में उसकी शाखाएं भी खोली और उसके द्वारा जन सेवा एवं जन शिक्षा की व्यवस्था की। इन्होंने देश के निर्बल एवं उपेक्षित व्यक्तियों पर विशेष रूप से ध्यान दिया कुल मिलाकर स्वामी जी के शैक्षिक विचार भारतीय धर्म एवं दर्शन पर आधारित है और भारतीय जनजीवन के अनुकूल हैं। राष्ट्रीय शिक्षा की योजना बनाने वालों को उनके विचारों से अवश्य प्रेरणा लेनी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

मूल शब्द- *राष्ट्रीयता, मनीषी, धर्मानुसार , आध्यात्मिक, सभ्यता ,संस्कृति, दार्शनिक,एकात्मता ,कर्म -योग, सद्भाव समरसता।*

प्रस्तावना:

स्वामी विवेकानंद का जन्म कोलकाता के बंगाली कायस्थ परिवार में 12 जनवरी 1863 को हुआ था। इनका वास्तविक नाम नरेंद्र नाथ दत्त था। इनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त कोलकाता के उच्च न्यायालय में वकील थे। स्वामी जी की मां श्रीमती भुवनेश्वरी देवी एक बुद्धिमती, गुणवती, धर्म परायण एवं परोपकारी स्त्री थी। स्वामी विवेकानंद जी श्री रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे।

धर्म और दर्शन के प्रति स्वामी जी का दृष्टिकोण बड़ा वैज्ञानिक था इन्होंने स्पष्ट किया कि विज्ञान और धर्म एक ही परम सत्य को व्यक्त करने के अलग- अलग साधन है। भारत निश्चित रूप से वैदिक एवं वैज्ञानिक दोनों ही विधाओं में हजारों वर्षों से संपन्न रहा है और आज भी है किंतु दुर्भाग्य बस कालांतर की गुलामियों के कारण भारतीयों के मन से जो विश्वास गायब हो गया था उसे पुनः वापस लाने,नर सेवा नारायण सेवा की भावना का विकास करने, दरिद्र नारायण की सेवा का महत्व आम जनमानस में प्रचारित एवं प्रसारित करने और भारतीयों को यह याद दिलाने की आप में भी वह समस्त क्षमताएं हैं जो अन्य देशों के लोगों में है आप भी अपने भाग्य के निर्माता है और बन सकते हैं इन सब बातों को आम भारतीय जनमानस के बीच फैलाने का श्रेय और वह भी शिक्षा के माध्यम से तो निश्चित रूप से स्वामी विवेकानंद जी को ही जाता है।

स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक चिंतन

स्वामी विवेकानंद भारती दर्शन के पंडित और अद्वैत वेदांत के पोषक थे। वह वेदांत को व्यावहारिक रूप देने के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके दार्शनिक विचार सैद्धांतिक रूप में उनके द्वारा रचित पुस्तकों में पढ़े जा सकते हैं और इनका व्यावहारिक रूप रामकृष्ण मिशन के जन कल्याणकारी कार्यों में देखा जा सकता है। स्वामी जी अपने देशवासियों की अज्ञानता और निर्धनता इन दोनों से बहुत चिंतित रहते थे और इन्हें दूर करने के लिए इन्होंने शिक्षा के प्रचार - प्रसार पर बल दिया था। भारतीय शिक्षा को भारतीय स्वरूप प्रदान करने के लिए वे सदैव स्मरण किए जाएंगे।

स्वामी विवेकानंद भारत के ऐसे अनमोल रत्न हैं जो भारत के लोगों में भारतीयता एवं मनुष्यता का एक ऐसा भाव या एक ऐसा विचार भरना चाहते थे जिससे कि भारतीय लोगों में भारतीय संस्कार एवं संस्कृति भरी हुई हो और उन्हें अपने शास्त्रों खास तौर पर वेदों से प्राप्त होने वाली अमूल्य शिक्षा पर गर्व हो और वे वेदों से प्राप्त होने वाले ज्ञान को निर्भीक होकर प्राप्त कर सके एवं न केवल अपना अपितु संपूर्ण समाज के अंदर मनुष्यता के भाव का जागरण कर सकें। स्वामी जी का स्पष्ट मत था कि भारत की उन्नति तब तक संभव नहीं है जब तक कि भारतीयों की दरिद्रता एवं अज्ञानता को पूर्ण रूप से दूर नहीं किया जायेगा। उनका स्पष्ट रूप से मानना था कि भारत के शिक्षाविदों, राजनेताओं एवं अन्य सभी समाज सुधारकों की यह पहली जिम्मेदारी है कि वह भारतीयों को निर्धनता एवं अशिक्षा से मुक्त करें ताकि वे भी अपना जीवन सम्मान एवं आत्मविश्वास के साथ जी सकें। इसके लिए स्वामी विवेकानंद जी ने अनेकों उदाहरण दिए, अनेकों यात्राएं की एवं पुस्तकों की रचना की तथा रामकृष्ण मिशन की स्थापना की जिसके माध्यम से न केवल भारत में अपितु भारत के बाहर भी स्वामी जी के विचारों को प्रसारित किया जाता है।

शिक्षा का संप्रत्यय

स्वामी जी शिक्षा के द्वारा मनुष्य को लौकिक एवं पारलौकिक दोनों ही प्रकार के जीवन के लिए तैयार करना चाहते थे। उनका विश्वास था कि जब तक हम भौतिक दृष्टि से संपन्न एवं सुखी नहीं होंगे तब तक ज्ञान,कर्म,भक्ति और योग यह सब कल्पना की बात है। लौकिक दृष्टि से इन्होंने नारा दिया हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो मन का बल बड़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलंबी बने। इस प्रकार वे शिक्षा को मनुष्य के निर्माण की प्रक्रिया मानते थे और मनुष्य के जीवन का अंतिम उद्देश्य अपने अंदर छिपी आत्मा (पूर्णता) की अनुभूति ही मानते थे। उनकी दृष्टि से जो शिक्षा यह दोनों कार्य करती है वही सच्ची शिक्षा है।

शिक्षा प्रत्येक मनुष्य को इस योग्य बनाती है कि वह जीवन में आने वाली समस्त कठिनाइयों का सामना निडरता पूर्वक कर सके। शिक्षा का अर्थ बालक के मस्तिष्क में सिर्फ सूचनाओं को ठूँसना नहीं है या डिग्री इकट्ठा करना नहीं है अपितु बालक के अंदर पहले से ही निहित गुणों को प्रकट करना है। जीवन में आने वाली समस्त चुनौतियों का सामना आत्मसम्मान और विश्वास के साथ करने की शिक्षा स्वामी जी के विचारों से प्राप्त होती है। आज प्लेवे से लेकर उच्च शिक्षा तक विद्यार्थी के मस्तिष्क में सिर्फ सूचनाओं को भरने के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य नहीं है

ऐसे में स्वामी जी के शिक्षा के सम्बन्ध में दिये गए विचार अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं क्योंकि उनका कहना था कि बालक को उसकी रुचि और योग्यता को ध्यान में रखते हुए शिक्षा देनी चाहिए और उसके मस्तिष्क में बाहर से सूचनाओं का अंबार डालने की जगह उसके अंदर पहले से ही विद्यमान गुणों को प्रकट होने का अवसर प्रदान करना चाहिए।

स्वामी विवेकानंद जी के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रासंगिकता

स्वामी जी ने शिक्षा को एक ऐसे ज्ञान एवं कौशल के रूप में स्वीकार किया है जो मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास के लिए आवश्यक है मनुष्य के भौतिक विकास की दृष्टि से इन्होंने उद्घोष किया कि हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो मन का बल बढे,बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलंबी बने और उन्होंने आध्यात्मिक विकास की दृष्टि से उद्घोष किया कि शिक्षा मनुष्य की अंतर निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है। यदि स्वामी जी द्वारा शिक्षा की इन परिभाषाओं को ध्यानपूर्वक देखा समझा जाए तो स्पष्ट होता है कि स्वामी जी शिक्षा को मनुष्य की भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास का साधन मानते थे और ऐसी शिक्षा को ही पूर्ण शिक्षा मानते थे।

स्वामी जी का यह शैक्षिक दर्शन शिक्षा के वर्तमान संदर्भ में खास तौर पर आधुनिक भारत की शैक्षिक आवश्यकताएं तथा हमारे संविधान की प्रस्तावना में भी परिलक्षित होता है। यहां स्पष्ट है कि शैक्षिक उद्देश्य, सामग्री और शिक्षण के तरीके और वास्तव में शिक्षा की पूरी प्रक्रिया धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद और लोकतंत्र पर आधारित होनी चाहिए।

भारत निश्चित रूप से विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश तो है ही साथ ही साथ विश्व के अनेक देशों की जनसंख्या से अधिक युवा भारत के अंदर निवास करते हैं यह भारत की संपत्ति भी हो सकते है यदि भारत के शिक्षा व्यवस्था में स्वामी विवेकानंद जी के विचारों एवं सुझावों को सम्मिलित किया जाए। क्योंकि स्वामी विवेकानंद जी ने युवाओं से विशेष अपेक्षा की थी और युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए, प्रेरित करने के लिए, उनके अंदर आत्मविश्वास जगाने के लिए, उनके मन से भय को समाप्त करने के लिए, उनको शारीरिक एवं मानसिक रूप से मजबूत बनाने के लिए अनेकों भाषण दिए और युवाओं का विशेह आह्वाहन भी किये। न केवल भारत में अपितु पूरे विश्व में अन्य कोई ऐसा विचारक या संत नहीं है जो स्वामी विवेकानंद जी के निकट भी आता हो। स्वामी जी ने जिस प्रकार शारीरिक एवं मानसिक दोनों ही प्रकार के विकास की बात की है वैसा अन्यत्र कहीं उदाहरण नहीं दिखता है। स्वामी जी के विचार भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को बांधे हुए हैं और उनको आधार बनाकर के विज्ञान को सावधानी पूर्वक अंगीकार करते हैं। तथा भारत को विश्व के पटल पर वेद और विज्ञान के एक संगम के रोंप में प्रस्तुत करते हैं। वे युवाओं के अंदर संस्कार, अनुशासन एवं ब्रह्मचर्य के महत्व के प्रति जागरूकता उत्पन्न करते हैं तह युवाओं को चरित्रवान बनाते हुए भविष्य एवं वर्तमान की सभी प्रकार की चुनौतियों का डटकर के सामना करने हेतु तैयार करते हैं। आज न केवल भारत बल्कि पूरा विश्व योग के महत्व को नतमस्तक होकर स्वीकार कर चुका है। तब आज से सैकड़ो वर्ष पहले स्वामी विवेकानंद जी योग के महत्व को न केवल जानते थे अपितु योगी का जीवन जीते हुए समूचे राष्ट्र के साथ- साथ संपूर्ण विश्व को मानवता का संदेश देते थे कि योग हमारे शारीरिक और मानसिक विकास के लिए कितना महत्वपूर्ण है।

शिक्षा के उद्देश्य

स्वामी विवेकानंद मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों रूपों को वास्तविक मानते थे एवं सत्य मानते थे। इसलिए मनुष्य के दोनों पक्षों के विकास पर बल देते थे स्वामी जी शिक्षा के उद्देश्यों पर बल देते हुए मुख्यतः निम्नलिखित उद्देश्यों का उल्लेख करते हैं :

शारीरिक विकास

स्वामी जी का स्पष्ट मत है कि जो व्यक्ति या बालक शारीरिक रूप से कमजोर है वह मानसिक रूप से या बौद्धिक रूप से मजबूत होने से पहले स्वयं को शारीरिक रूप से अवश्य मजबूत करे तभी वह बौद्धिक विकास के लिए उपयुक्त हो सकेगा। स्वामी जी बौद्धिक एवं मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विकास को भी बराबर महत्व देते हैं। उन्होंने शारीरिक मजबूती को जीवन जीने के लिए एक अनिवार्य कसौटी माना है। इसलिए हमारी शिक्षा के पाठ्यक्रम में और विद्यालय के वातावरण में ऐसी पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए कि बालक का समुचित शारीरिक विकास हो सके।

मानसिक एवं बौद्धिक विकास

स्वामी विवेकानंद जी का शिक्षा दर्शन एक समन्वित एवं संतुलित शिक्षा दर्शन है क्योंकि इसमें वेद के साथ-साथ विज्ञान की बात भी है और शारीरिक मजबूती के साथ-साथ मानसिक एवं बौद्धिक विकास की बात भी है।

स्वामी विवेकानंद जी बालक को मजबूत एवं बुद्धिमान बनने के लिए खेल, योग एवं ध्यान को एक महत्वपूर्ण साधन मानते हैं।

समाज सेवा की भावना का विकास

मनुष्य के अंदर इस बात को आरोपित करना कि वह समाज का ही एक अभिन्न अंग है और उसको पूरे जीवन में बहुत कुछ या यूँ कहें कि लगभग सभी कुछ समाजं से ही प्राप्त होता है। वह अपने पूरे जीवन की यात्रा समाज के बीच में ही पूरी करता है तो निश्चित रूप से उसकी भी जिम्मेदारी है कि वह समाज को भी कुछ अपनी तरफ से प्रदान करें अर्थात समाज को पोषित करें समाज की उन्नति के लिए अपना योगदान दे। स्वामी जी का स्पष्ट मत है कि प्रत्येक व्यक्ति की यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वह अपने समाज के प्रति दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से करें। जब तक हमारे समाज की उन्नति नहीं होती है तब तक हमारी व्यक्तिगत उन्नति किसी काम की नहीं है। व्यक्तिगत उन्नति के साथ-साथ समाज की उन्नति के बाद ही राष्ट्र की उन्नति की बात आती है।

नैतिक एवं चारित्रिक विकास

स्वामी जी ने जिस बात पर अपने शिक्षा दर्शन में सबसे अधिक बल दिया वह है नैतिकता एवं चरित्र का निर्माण। स्वामी जी का स्पष्ट मानना है कि जिस व्यक्ति का नैतिक पतन और चारित्रिक पतन हो जाए वह व्यक्ति समाज में राक्षसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। क्योंकि नैतिक मूल्य और चारित्रिक मूल्यों के आभाव में व्यक्ति का व्यवहार अमानवीय हो जाता है जो कि पूरे मानव समाज के लिए खतरा होता है। इसीलिए स्वामी जी ने कहा है कि शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए जिससे बालक के अंदर उच्च कोटि के नैतिक आदर्श एवं सोने से भी खरा चरित्र का निर्माण होना चाहिए तभी जाकर हम एक सुखी और संपन्न समाज का निर्माण कर सकते हैं।

व्यवसायिक विकास

बालक को नैतिक एवं चारित्रिक विकास के साथ-साथ ऐसी शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए जिससे वह स्वावलंबी बन सके। दूसरों पर आश्रित व्यक्ति अपने परिवार के साथ-साथ समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए भी एक बोझ के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। व्यक्ति को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जिससे वह इस योग्य बन सके कि वह स्वाभिमान एवं आत्मविश्वास के साथ अपने भावी जीवन को जी सके एवं इस योग्य भी हो कि अपने सामाजिक दायित्वों को भी निभा सके साथ ही साथ दरिद्र नारायण की भी सेवा करके मोक्ष को भी प्राप्त कर सके।

राष्ट्रीय एकता एवं विश्व बंधुत्व का विकास

राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता न केवल राष्ट्र के लिए अपितु समाज के साथ-साथ व्यक्ति के स्वाभिमान के लिए भी एक अनिवार्य कसौटी है। इतिहास गवाह है कि जिन-जिन देश में राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के प्रति वहां के नागरिकों के अंदर सम्मान नहीं जागृत हुआ आज वह देश

दुनिया के मानचित्र से मिट गया है और वर्तमान में भी कुछ ऐसे देश हैं जो अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। इसलिए निश्चित रूप से हमें ऐसी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना चाहिए जिससे बालक के अंदर अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम और सम्मान निश्चित रूप से पैदा हो सके।

जो व्यक्ति अपने राष्ट्र से प्रेम नहीं कर सकता वह चाहे जितनी भी बातें कर ले वह निश्चित रूप से विश्व के कल्याण की बात भी नहीं कर सकता। भारतीय संस्कृति है में यह बात हजारों वर्ष पहले से है कि "वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना से विश्व को देखना चाहिए ऐसा कहने का ये तात्पर्य नहीं है कि हम अपने राष्ट्र के खिलाफ है अपितु इसका व्यावहारिक अर्थ यह है कि हमें अपने राष्ट्र से अटूट प्रेम है: हम व्यक्तिगत विभिन्नताओं, भाषा, क्षेत्र, पहनावा, भजन व् भोजन आदि की विभिन्नता के बावजूद भी हम सभी एक राष्ट्र के निवासी हैं लेकिन मानव होने के नाते हम पूरे विश्व को अपना परिवार मानते हैं अर्थात हम किसी अन्य देश के खिलाफ भी नहीं है।

धार्मिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक विकास

स्वामी विवेकानंद का मानना है कि धर्म के बिना चाहे विज्ञान हो या शिक्षा दोनों ही मनुष्य क्व लिए उपयोगी होने के स्थान पे हानिकारक हो सकता है । उनका मानना है कि व्यक्ति को धर्म की शिक्षा अनिवार्य रूप से देनी चाहिए ताकि वह अपने व्यवहार को संयमित कर सके और समाज के अनुकूल व्यवहार करें और मानवता की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहे। सही मायने में धर्म परायण व्यक्ति समाज के लिए एवं राष्ट्र के लिए तो उपयोगी एवं हितकारी होता ही है अपितु संपूर्ण विश्व के लिए वह एक अमूल्य संपत्ति की तरह होता है क्योंकि धर्म के पथ पर चलने वाला व्यक्ति अनुशासित एवं चरित्रवान भी होता है।

व्यक्ति के शारीरिक विकास के साथ-साथ उसके मानसिक एवं बौद्धिक विकास के लिए यह अनिवार्य है कि उसे आध्यात्मिक शिक्षा भी प्रदान की जाए ताकि व्यक्ति का संपूर्ण विकास हो सके एवं उसके अंदर पहले से निहित पूर्णता काप्रकटीकरण आसानी से एवं पूर्ण रूप से हो सके।

शिक्षा की पाठ्यचर्या

स्वामी जी ने अपने द्वारा निश्चित शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु एक विस्तृत पाठ्यचर्या का विधान प्रस्तुत किया। इन्होंने शिक्षा की पाठ्यचर्या में मनुष्य के शारीरिक विकास हेतु खेलकूद, व्यायाम, योग क्रिया और मानसिक एवं बौद्धिक विकास हेतु भाषा, कला, संगीत, इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित और विज्ञान विषयों को स्थान देने पर बल दिया।

स्वामी जी ने देश में उच्च शिक्षा की व्यवस्था करने और उसके द्वारा अपने ही देश में इंजीनियरों, डॉक्टर, वकीलों और प्रशासको आदिकी उपलब्धता हेतु शिक्षा की व्यवस्था करने पर भी बल दिया। वे भली- भांति जानते थे कि जब तक हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आत्मनिर्भर नहीं हो जाते तब तक हम ना भौतिक उन्नति कर सकते हैं और न ही आध्यात्मिक।

स्वामी जी ने शिक्षाविदों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि देश-विदेश में जहां जो अच्छा है, लाभकारी है, हमारे समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए आवश्यक है तो उसे उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में स्थान अवश्य देना चाहिए। इस प्रकार शिक्षा की पाठ्यचर्या के संबंध में स्वामी जी का दृष्टिकोण अति व्यापक था जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परिलक्षित भी होता है।

शिक्षण विधियां

स्वामी विवेकानंद की आत्मा की पूर्णता में विश्वास करते थे और यह मानते थे की आत्मा सर्वज्ञ है । स्वामी जी के विचार में मनुष्य को आत्मज्ञान तभी होता है जब उसे भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान हो। स्वामी जी ने देश-विदेश में लोगों को वेदांत की शिक्षा दी

थी और उन्हें ध्यान क्रिया में प्रशिक्षित भी किया था। स्वामी जी द्वारा भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए प्रमुख रूप से निम्नलिखित विधियों का समर्थन किया गया है

1. अनुकरण विधि
2. व्याख्यान विधि
3. तारक एवं विचार विमर्श विधि
4. निर्देशन एवं परामर्श विधि
5. प्रदर्शन एवं प्रयोग विधि
6. स्वाध्याय विधि
7. योग विधि

शिक्षक शिक्षार्थी संबंध

स्वामी विवेकानंद जी प्राचीन गुरू गृह प्रणाली के समर्थक थे। उनकी दृष्टि में शिक्षकों को भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान होना चाहिए। जिससे शिक्षक बच्चों को लौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवन के लिए तैयार कर सके। यह शिक्षकों को संयमी और आत्मज्ञानी होने का उपदेश देते थे। तभी तो शिष्य उनका अनुकरण कर संयमी एवं आत्मज्ञानी हो सकता है। स्वामी जी शिक्षकों से यह भी आशा करते थे कि वह मनोविज्ञान की सहायता से बच्चों की जन्मजात भिन्नता को समझ कर उनके लिए उनके अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था करें। इस प्रकार स्वामी जी शिक्षक के प्राचीन और अर्वाचीन दोनों स्वरूपों के समर्थक थे। स्वामी जी के अनुसार गुरु शिष्य का संबंध केवल लौकिक ही नहीं होना चाहिए अपितु उन्हें एक दूसरे के दिव्य स्वरुप को भी देखना समझना चाहिए। स्वामी जी के अनुसार भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार के ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षार्थी ब्रह्मचर्य का पालन करें।

अनुशासन

स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार अनुशासन का अर्थ है अपने व्यवहार में आत्मा द्वारा निर्दिष्ट होना। उनके अनुसार जब मनुष्य अपने प्राकृतिक रूप से प्रेरित होकर कार्य करता है तो हम उसे अनुशासित नहीं कह सकते जब वह अपने प्राकृतिक "स्व"पर संयम रखकर सामाजिक "स्व" से प्रेरित होता है तो हम उसे अनुशासित कह सकते हैं।

अनुशासन का तात्पर्य बाहर से थोपे गए कानून, नियम, दिशा निर्देश या दंड के प्रावधान से नहीं है। सच्चा अनुशासन तो एक ऐसी मनोदशा है जो व्यक्ति के अंदर स्वयं ही होना चाहिए और ऐसी मनोदशा तभी उत्पन्न हो सकती है जब वह व्यक्ति स्वयं करके सीखे या फिर अनुशासन के महत्व को समझ सके। ऐसे में शिक्षक का यह दायित्व है कि वह इस प्रकार के व्यवहार शिक्षार्थियों के सामने करें जिससे शिक्षार्थी अपने आचार्य के आचरण से प्रभावित होकर स्वयं के अंदर वह बदलाव लायें जिसकी अपेक्षा उनके आचार्य उनसे करते हैं। स्वामी जी का स्पष्ट मत है कि बालक के साथ कठोरता नहीं बरती जानी चाहिए क्योंकि बलपूर्वक किसी मनुष्य को अनुशासित नहीं किया जा सकता है अपितु उसको विद्रोह करने के लिए उकसाया जरुर जा सकता है।

भारतीय शैक्षिक परम्परा के पक्षधर

स्वामी विवेकानंद जी वैसे तो वैज्ञानिक शिक्षा पद्धति और पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के पक्षधर थे परंतु उनका स्पष्ट मत था कि पश्चिम के वातावरण में और भारत के वातावरण में जमीन आसमान का अंतर है इसलिए हमें पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था को हूबहू भारत में लागू नहीं करना चाहिए।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

पश्चिम की शिक्षा व्यवस्था की जो भी कमियां थी उसको दूर करते हुए और उसको भारतीयों के लिए अनुकूल बनाते हुए हमें ऐसी शिक्षा व्यवस्था बनानी चाहिए जो वेदों से प्रेरित हो और भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत हो तथा जिसमें वैज्ञानिक तथ्यों एवं सिद्धांतों के लिए भी भरपूर जगह हो।

स्वामी जी किसी भी कीमत पर मशीनी शिक्षा या मशीनों के ऊपर शत प्रतिशत निर्भरता के खिलाफ थे उनका मानना था कि मनुष्य के अंदर मानवीय गुणों का विकास करना शिक्षा का सबसे अनिवार्य उद्देश्य है। यदि किसी कारण से मनुष्य के अंदर मानवीय गुणों का अभाव हो जाएगा तो वह विज्ञान का भी दुरुपयोग करेगा और न केवल स्वयं के प्रति अपितु समूचे विश्व के लिए मानव ही स्वयं खतरा बनकर खड़ा हो जाएगा। इसी कारण से स्वामी विवेकानंद जी वैदिक शिक्षा,धार्मिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक शिक्षा के साथ-साथ योग की शिक्षा के भी पक्षधर थे। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि स्वामी विवेकानंद जी पूरी दुनिया का भ्रमण करने के बाद भी अंत में ये स्वीकार करते हैं कि भारतीयों के लिए जो शिक्षा व्यवस्था उपयुक्त होगी वह निश्चित रूप से भारतीय संस्कृति से पोषित होनी चाहिए एवं भारतीय भाषा में ही होनी चाहिए।

बालक की स्वतंत्रता

प्रत्येक बालक का जन्म एक विशेष उद्देश्य के लिए होता है अर्थात प्रत्येक बालक स्वयं में विशिष्ट है।अतः शिक्षक को यह प्रयास करना चाहिए कि वह प्रत्येक बालक के व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखते हुवे उसके साथ व्यवहार करे तभी जिस पूर्णता के प्रकटीकरण कि बात स्वामी जी करते हैं वह संभव हो सकेगा।

आधुनिक मनोविज्ञान भी इस बात पर बल देता है कि बालको को उनके रूचि, योग्यता और वातावरण के अनुसार ही शिक्षित करना चाहिए। स्वामी जी तो डंके कि चोट पे कहते थे कि किसी भी व्यक्ति को कोई भी व्यक्ति कुछ भी सिखा नहीं सकता है क्योंकि मनुष्य के साथ जानवर कि तरह वर्ताव नहीं किया जा सकता है और न ही करना चाहिए। उनका मानना था कि जानवर को प्रशिक्षित किया जा सकता है परन्तु को मनुष्य को सिखाया नहीं जा सकता है बस अनुकूल वातावरण दे कर के उसके अन्दर सन्निहित पूर्णता को प्रकट किया जा सकता है।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद जी का शिक्षा दर्शन आज भी प्रासंगिक है और उनकी शिक्षा पद्धति शिक्षा के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करती है। इनके शैक्षिक विचार आज भी पूर्णता लिए नए प्रतीत होते हैं जो शिक्षा के क्षेत्र में सेतु की तरह कार्य कर रहे हैं। स्वामी जी के शैक्षिक विचार भारतीय धर्म एवं दर्शन पर आधारित है और भारतीय जन जीवन के अनुकूल हैं। आज हम जो कुछ भी हैं वह इस संबंध एवं व्यापक दृष्टिकोण के परिणाम स्वरुप ही हैं कहने का तात्पर्य यह है कि आज का भारत विज्ञानं के क्षेत्र में तो रोज नए प्रतिमान स्थापित कर ही रहा है साथ ही साथ जो भारत की वैभवशाली संस्कृति है उसका भी डंका विश्व में बज रहा है फिर चाहे वो योग कि बात हो, आयुर्वेद कि बात हो,विश्व शांति के लिए किये जा रहे प्रयास कि बात हो, चाहे मनोरंजन की बात हो या फिर शिक्षा की बात हो या आध्यात्म की बात हो। स्वामी जी के शैक्षिक विचारों की उपादेयता हम इस बात से समझ सकते हैं कि नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी स्वामी जी के शैक्षिक विचारों को हुबहू स्वीकार किया गया है और वेद और विज्ञानं दोनों के महत्व को भी स्वीकार किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ पांडे राम सकल, शिक्षा के दार्शनिक आधार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा योग।
2. स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन अरोड़ा प्रकाशन दिल्ली।
3. स्वामी विवेकानंद संक्षिप्त जीवनी अद्वैत आश्रम कोलकाता।

4. स्वामी विवेकानंद और शिक्षा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद नई दिल्ली।

5. स्वामी विवेकानंद आकांक्षा प्रकाशन नई दिल्ली।

6. आशा प्रसाद स्वामी, विवेकानंद एक जीवनी।

7. स्वामी विवेकानंद मेरा भारत अमर भारत रामकृष्ण मठ नागपुर।

8. स्वामी विवेकानंद हिंदू धर्म रामकृष्ण मठ नागपुर।

9. प्रयाग नारायण त्रिपाठी, स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन।

10. स्वामी गंभीरानंद, युगणायक विवेकानंद रामकृष्ण मठ नागपुर।

11. विवेक वादी, स्वामी विवेकानंद के शिक्षाएं रामकृष्ण मठ नागपुर।

12. त्रिभुवन कुमार गर्ग, संपादक - स्वामी विवेकानंद सूक्तियां एवं उपदेश

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-02, Dec.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Dec-2024/27

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

अनंत कुमार

For publication of Book Review title

"स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन की उपादेयता"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-02, Month December, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com